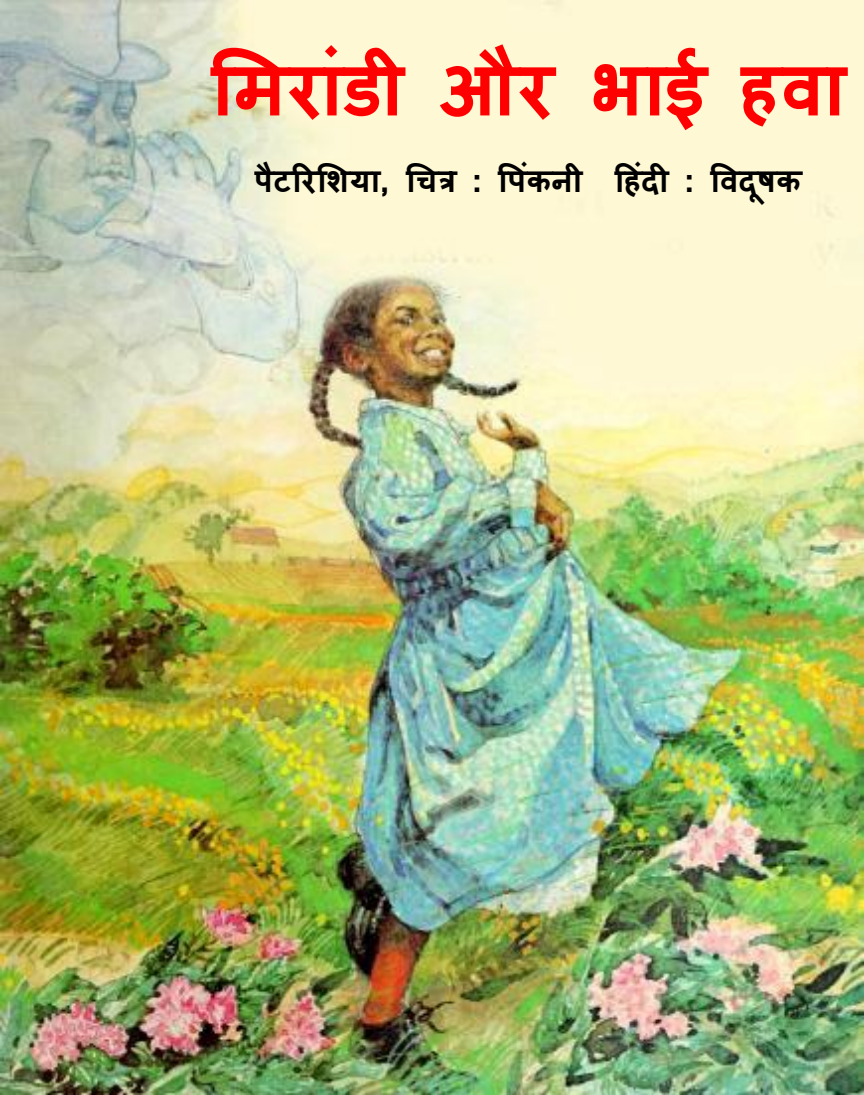


मिरांडी और भाई हवा

पैटरिशिया, चित्र : पिंगनी हिंदी : विदूषक



मिरांडी और भाई हवा

पैटरिशिया, चित्र : पिकनी हिंदी : विदूषक



लेखक का नोट

हमारे परिवार के खजाने में एक नायाब फोटो है मेरे दादा-दादी की. फोटो 1906 की है, उनकी शादी से पांच वर्ष पहले की. उस समय वो बिल्कुल युवा थे और उन्होंने “केक-वाक” स्पर्धा में एक केक जीता था. केक बहुत बड़ा था और बड़ी खूबसूरती से सजा था.

“केक-वाक” का कम्पटीशन सबसे पहले अमरीका में आए गुलामों ने शुरू किया. “केक-वाक” असल में एक नृत्य है जो एफ्रो-अमेरिकन संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है. इस नृत्य में औरत-मर्द की जोड़ियाँ भाग लेती हैं. वो बेंजो और सारंगी की धुनों पर एक बड़े चौकोर में नाचते हैं. जब जोड़ियाँ गोल-गोल घूमती, किक मारती और नाचती हैं तब समुदाय के अनुभवी लोग उनकी वेशभूषा, और नृत्य की बारीकियों पर उनका मूल्यांकन करते हैं. जीतने वाली जोड़ी को इनाम में एक बड़ा केक मिलता है.

मैं अच्छी तरह से कल्पना कर सकती हूँ कि मेरे दादा-दादी ने वो नृत्य कितनी कलाकारी के साथ किया होगा. उनकी पीठ पीछे की ओर धनुष की तरह झुकी होगी, उनके पैर का पंजा हवा में लहरा रहा होगा और उनका सर सीधा होगा. उनका जीवन बेहद उल्लास से भरा था – विशेषकर दादी का. दादा कहते थे कि दादी ने हवा पर काबू पा लिया था. मैं उनसे सहमत थी.

सायं! सायं!

वसंत का मौसम था और भाई-हवा तेज़ी से बह रही थी. हवा पहाड़ों से होकर आई थी और वो बेहद सुन्दर कपड़े पहने थी. पीछे-पीछे उसकी रुपहली झालर बह रही थी.

सायं! सायं! सायं! सायं!







“कितना अच्छा हो अगर भाई-हवा, जूनियर “केक-वाक” में मेरा पार्टनर बने। कल रात को ही इस नृत्य का कम्पटीशन है,” मिरांडी ने कहा। उसका चेहरा कांच की खिड़की से चिपका हुआ था। “तब मैं कम्पटीशन ज़रूर जीत जाऊंगी।”

यह सुनकर माँ मुस्कराई। “यह एक पुरानी कहावत है कि जो भी हवा को पकड़ेगा, वो अपनी मर्जी के अनुसार उससे काम करा पाएगा।”

“मैं यही करूंगी,” मिरांडी ने कहा। उसके बाद वो पूरे कमरे में नाचती रही। कभी वो झुकती, कभी गोल-गोल चक्कर लगाती और बहुत सुन्दर अभिनय करती। “यह मेरी पहली “केक-वाक” है। और उनमें मैं हवा के साथ नाचूंगी!”



जब सुबह हुई तो मिरांडी ने भाई-हवा को पकड़ने की कोशिश की. जब मिरांडी उनसे कुछ पूछने के लिए आई उस समय दादी बीसली बाहर मुर्गियों का चुगगा डाल रही थीं. "क्या आपको भाई-हवा को पकड़ने की तरकीब पता है? मैं आज रात को केक-वाक कम्पटीशन में भाई-हवा को अपना जोड़ीदार बनाना चाहती हूँ."







“मैं हवा को आज पकड़कर रखूंगी,” मिरांडी ने बाहर गोल-गोल घूमते हुए कहा.

“किसे पकड़कर रखोगी?”

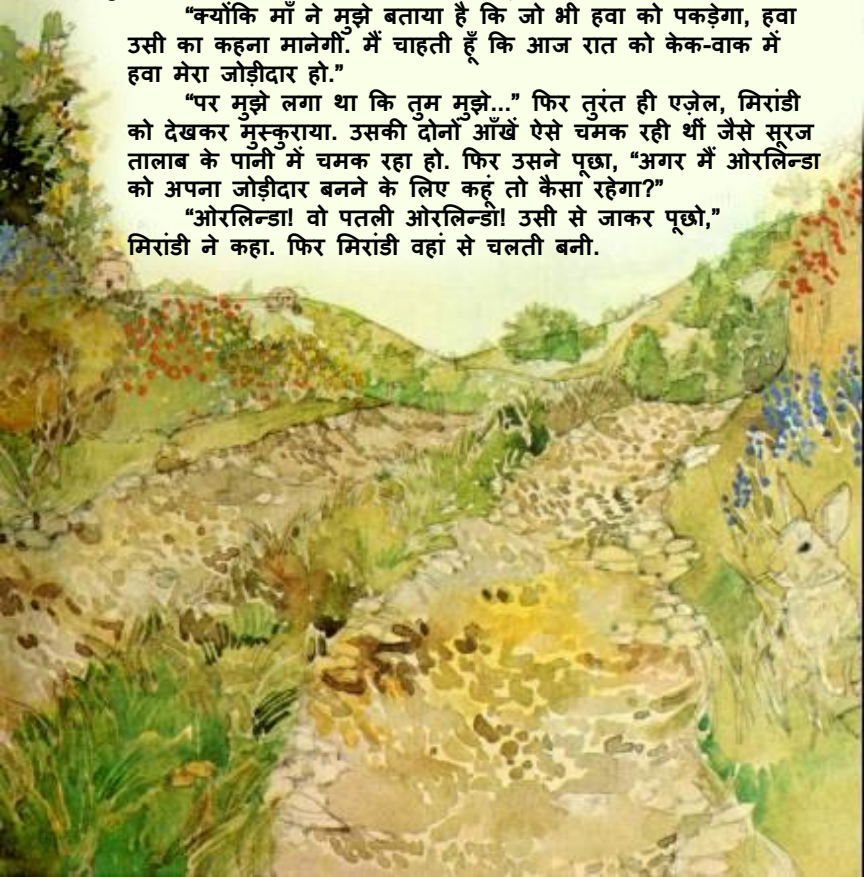
मिरांडी को पीछे मुड़कर देखने की ज़रूरत ही नहीं थी. उसे पता था कि वो अनाड़ी लड़का एज़ेल ही होगा. मिरांडी ने उसे कोई जवाब नहीं दिया और वो सड़क की तरफ बढ़ने लगी. एज़ेल भी उसके पीछे-पीछे चला. एज़ेल ने मिरांडी से पूछा.

“तुम सबसे हवा पकड़ने की तरकीब क्यों पूछ रही हो?”

“क्योंकि माँ ने मुझे बताया है कि जो भी हवा को पकड़ेगा, हवा उसी का कहना मानेगी. मैं चाहती हूँ कि आज रात को केक-वाक में हवा मेरा जोड़ीदार हो.”

“पर मुझे लगा था कि तुम मुझे...” फिर तुरंत ही एज़ेल, मिरांडी को देखकर मुस्कराया. उसकी दोनों आँखें ऐसे चमक रही थीं जैसे सूरज तालाब के पानी में चमक रहा हो. फिर उसने पूछा, “अगर मैं ओरलिन्डा को अपना जोड़ीदार बनने के लिए कहूँ तो कैसा रहेगा?”

“ओरलिन्डा! वो पतली ओरलिन्डा! उसी से जाकर पूछो,” मिरांडी ने कहा. फिर मिरांडी वहां से चलती बनी.



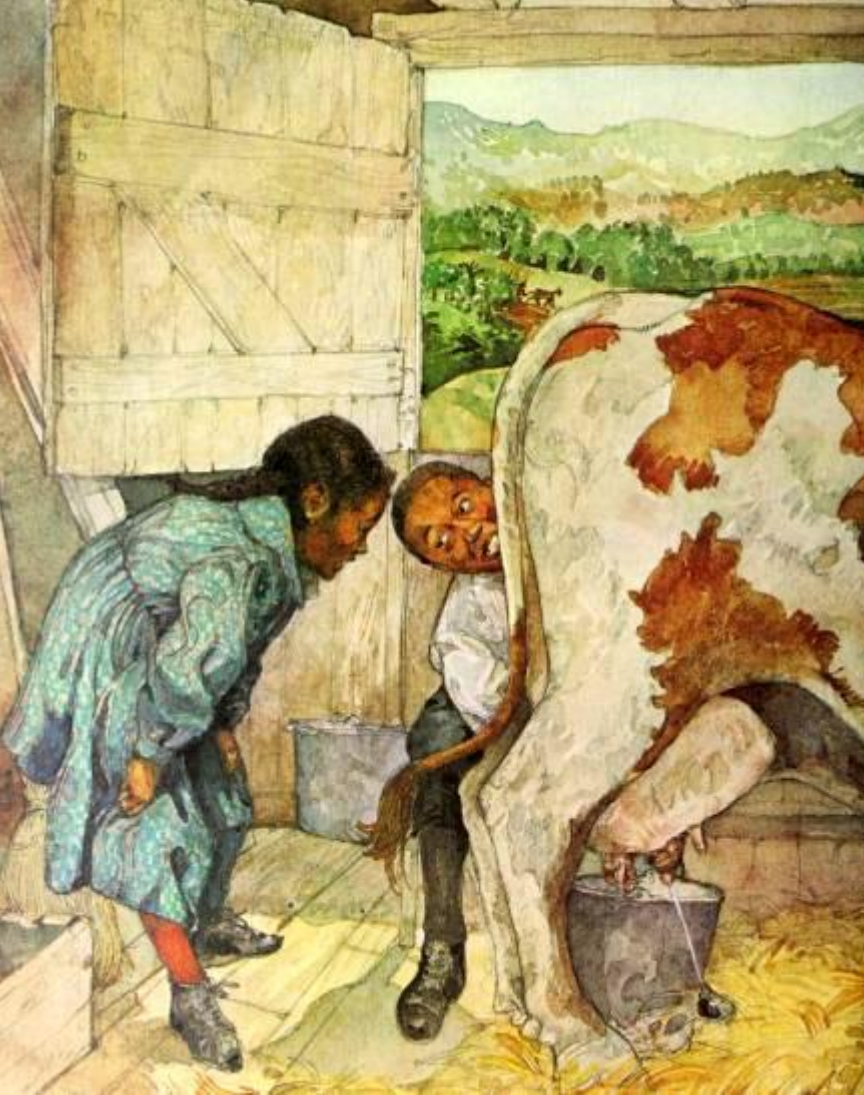
कोने वाले दुकानदार मिस्टर जेसप ने मिरांडी को अपनी पर-दादी की बात बताई. "अगर तुम हवा को पकड़ना चाहती हो तो भाई-हवा के पदचिन्हों पर काली-मिर्च छिड़को. उससे उसे छींक आएगी. "जब वो छींकने में व्यस्त हो तो लपककर पीछे से उसपर कम्बल डालो."

इस सलाह के बाद मिरांडी सीधे घर भागी. उसने काली-मिर्च की बोतल उठाई और माँ की एक रजाई ली. कुछ ही देर में भाई-हवा वहां घास पर घूमता हुआ आया.

उसके पीछे जाकर मिरांडी ने काली-मिर्च पीसना शुरू की. फिर बाद में उसने रजाई फेंकी. पर क्या? भाई-हवा वहां से खिसक लिया!







मिरांडी छींक रही थी जब एज़ेल वहां आया.

मिरांडी ने उसे सारी बात बताई.

“मैं तुम्हें बता सकता था कि हवा का कोई पदचिन्ह नहीं होता,”
एज़ेल ने अपने परिवार की गाय को दूहते हुए कहा. उससे दूध गिरने ही
वाला था. और कुछ दूध गिरा भी.

मिरांडी को दुबारा छींक आई.

“क्या तुमने ओरलिन्डा से पार्टनर बनने के बारे में पूछा?”

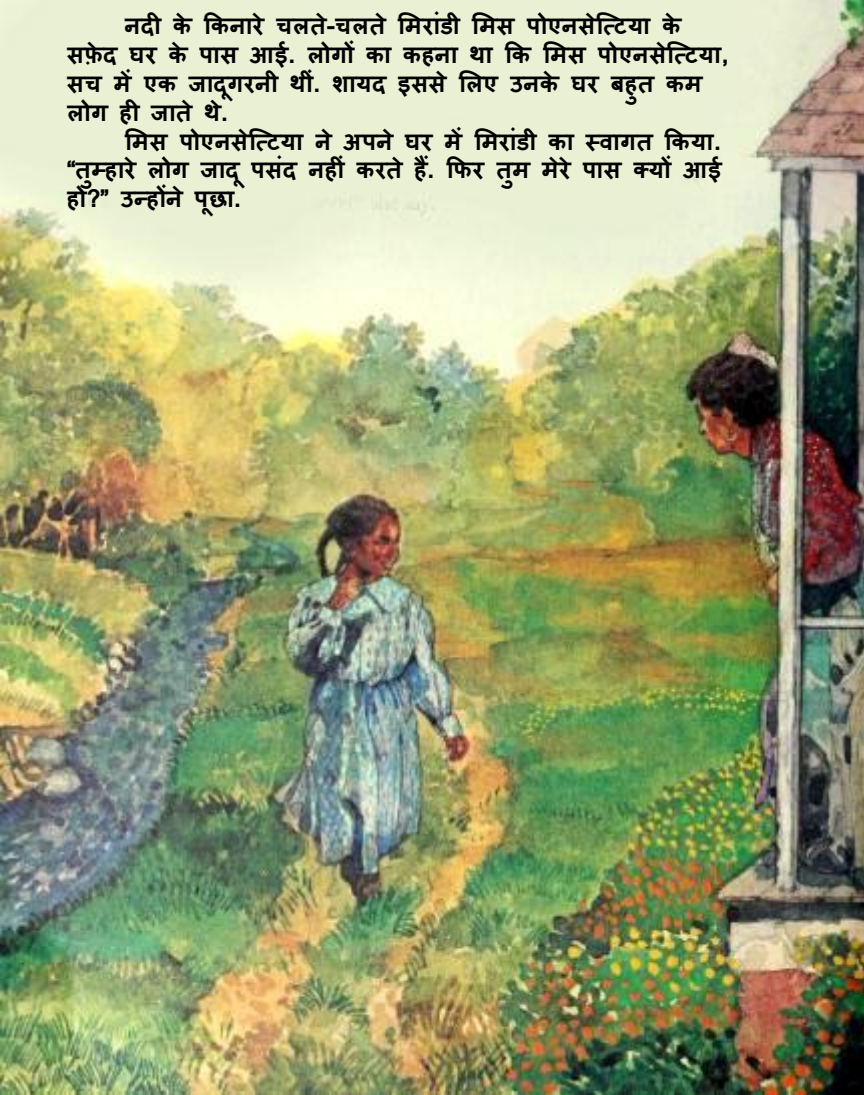
“हाँ मैंने उससे पूछा, और उसने कहा

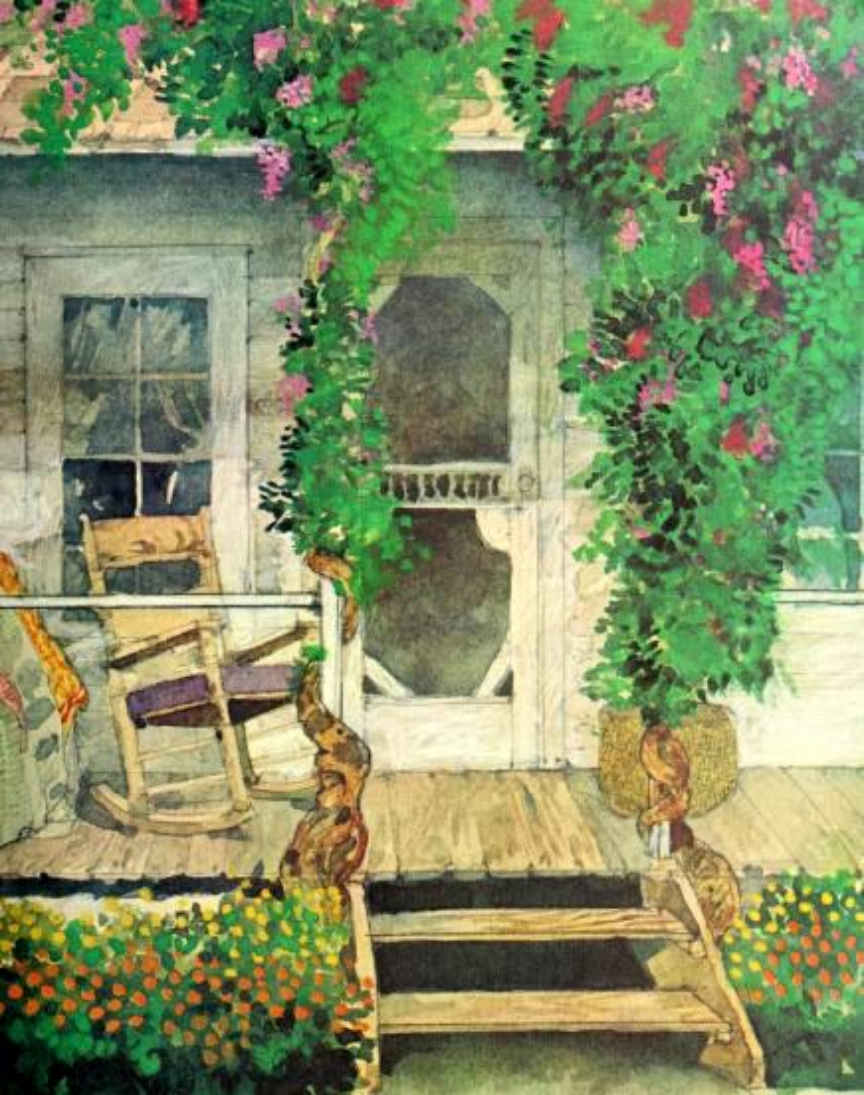
“ओरलिन्डा ने तुमसे क्या कहा, मुझे उससे क्या लेना-देना,” मिरांडी
ने उसे बीच में टोकते हुए कहा. फिर वो वहां से तेज़ी से चल दी.



नदी के किनारे चलते-चलते मिरांडी मिस पोएनसेट्टिया के सफ़ेद घर के पास आई. लोगों का कहना था कि मिस पोएनसेट्टिया, सच में एक जादूगरनी थीं. शायद इससे लिए उनके घर बहुत कम लोग ही जाते थे.

मिस पोएनसेट्टिया ने अपने घर में मिरांडी का स्वागत किया. "तुम्हारे लोग जादू पसंद नहीं करते हैं. फिर तुम मेरे पास क्यों आई हो?" उन्होंने पूछा.





मिरांडी को लगा कि अगर मिस पोएनसेट्टिया जादूगरनी हैं तो उन्हें उसकी परेशानी का हल पता होगा. उसने मिस पोएनसेट्टिया से कहा, “मुझे कोई ऐसी जादुई शीशी चाहिए जिससे भाई-हवा को मैं उसमें पकड़ सकूँ. जिससे आज रात के केक-वाक नाच में वो मेरा पार्टनर बने.”

यह सुनकर मिस पोएनसेट्टिया ने अपना सिर हिलाया. फिर उन्होंने अपनी रहस्यमयी अल्मारी खोली. उनके चोगे से अनेकों रंगीन रुमाल लटक रहे थे और फड़फड़ा रहे थे.

कुछ देर बाद वो एक पुरानी किताब लेकर वापिस लौटी. मिरांडी ने एक बार फिर दोहराया कि वो क्या चाहती थी. मिस पोएनसेट्टिया ने किताब में उसका हल खोजा.

“मेरे पास आपको देने के लिए सिर्फ कुछ सिक्के हैं जो मुझे क्रिसमस पर मिले थे,” मिरांडी ने कहा.

“अगर तुम आज रात इन्हें पहनकर नाचोगी तो समझो मुझे मेरी फीस मिल गई. मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि तुम उस कम्पटीशन में सबसे सुन्दर लड़की होगी.” उसके बाद मिस पोएनसेट्टिया ने मिरांडी को रात को पहनने के लिए दो पारदर्शी रुमाल दिए.





उसके बाद मिरांडी दौड़ी-दौड़ी घर आई. जैसा कि जादू में बताया गया था उसे घर पर एक कौंक वाली शीशी मिली. उसने उसे बारिश के पानी से धोया. फिर उसने उसमें सिरका भरा. उसके बाद वो एक बड़े मजनु के पेड़ के पास गई और वहां उसने शीशी को पेड़ के उत्तर में रख दिया. अब उसके पास इंतज़ार करने के अलावा और कोई चारा नहीं था.

जल्दी ही भाई-हवा जंगल में से निकलकर वहां मौजूद हो गए. मिरांडी ने कभी भी कोई इतना ऊंचा शख्स नहीं देखा था. मिरांडी का जादू काम कर रहा था. भाई-हवा ने सिरके को सूंघा और फिर वो सायां की आवाज़ करके शीशी में घुस गए.

“मैंने तुम्हें पकड़ लिया!” मिरांडी चिल्लाई और फिर वो खुशी से गोल-गोल नाची. पर जब उसने अपना सर उठाया तो भाई-हवा पेड़ के सामने वाली टहनी पर थे. वो झुक कर हंस रहा था. फिर वो अपनी लम्बी हवा की पूँछ को हिलाता हुआ वहां से गायब हो गया!

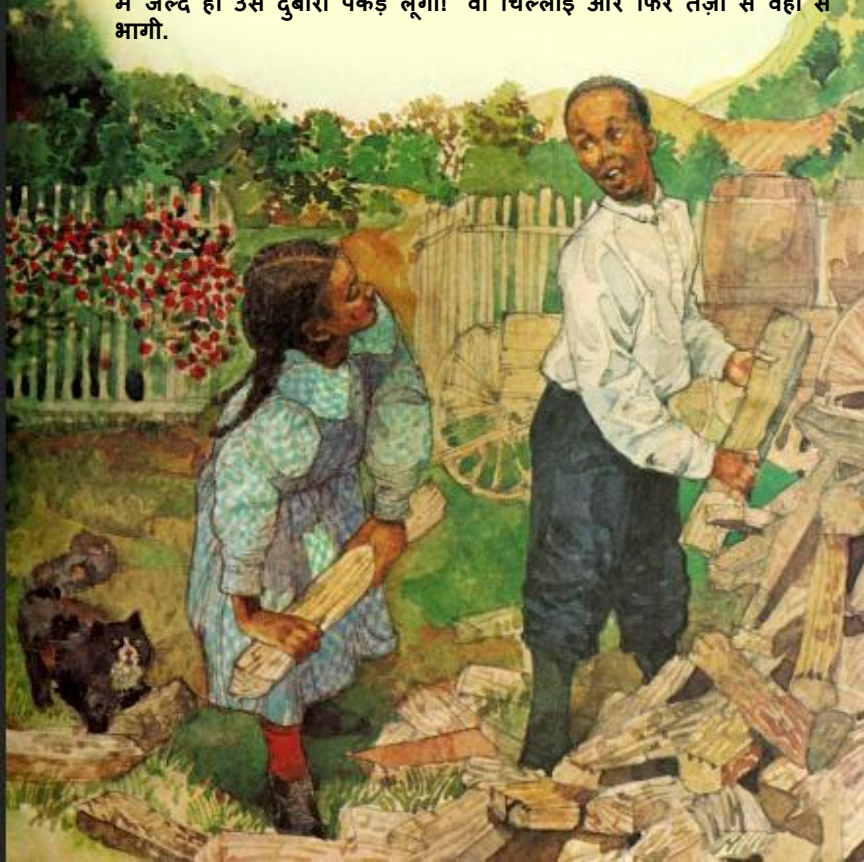






“वो इनती जल्दी शीशी में कैसे अन्दर घुसा और फिर बाहर कैसे निकला?” यह सवाल मिरांडी ने एज़ेल से पूछा. एज़ेल लकड़ियाँ उठा रहा था. एज़ेल ने गलत लकड़ी को खींचा जिसके कारण लकड़ियों का पूरा ढेर बिखर गया. मिरांडी ने लकड़ियों को फिर से करीने से लगाने में एज़ेल की मदद की. “अब मैं क्या करूंगी?” मिरांडी ने पूछा.

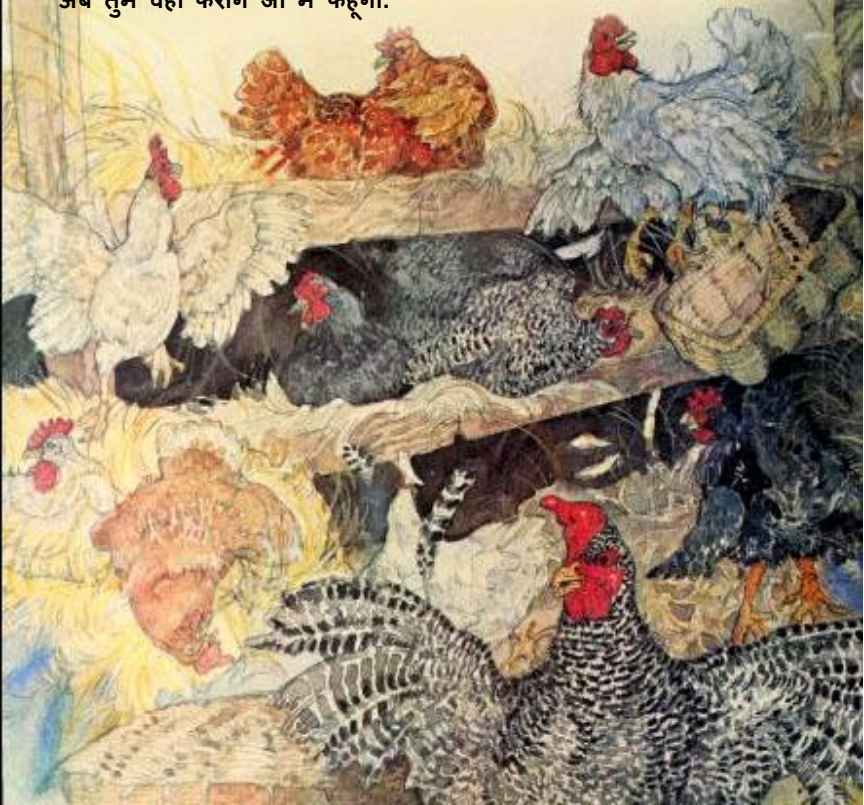
एज़ेल हंसा. “ऐसा लगता है जैसे तुम्हें पार्टनर की ज़रूरत ही नहीं है.” इससे मिरांडी काफी गुस्सा हुई. “तुम हंस रहे हो, पर थोड़ा रुको! मैं जल्द ही उसे दुबारा पकड़ लूंगी!” वो चिल्लाई और फिर तेज़ी से वहां से भागी.



अब केक-वाक नृत्य शुरू होने में कुछ ही घंटे बाकी बचे थे. मिरांडी अपने वरांडे में दुखी बैठी थी तभी भाई-हवा बाड़ से धूल उड़ाता हुआ आया. फिर वो फूलों की क्यारी से होता हुआ स्नोबॉल पेड़ को हिलाता हुआ खलिहान में चला गया.

जब भाई-हवा खलिहान में माँ की मुर्गियां को डरा रहा था तब मिरांडी वहां चुपके से गई और उसने खलिहान का दरवाज़ा कसकर बंद कर दिया. "अब वो यहाँ से कैसे भागेगा, क्योंकि पिताजी ने सारी झिरियाँ पहले ही सील कर दी थीं."

"भैंने तुम्हें पकड़ लिया है!" मिरांडी ताली बजाती हुई चिल्लाई.
"अब तुम वही करोगे जो मैं कहूँगी."







शाम होते ही सब पड़ोसी धीरे-धीरे करके स्कूल में जमा होने लगे. हर कोई अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने था. सारंगी बजाने वाले एक कोने में खड़े थे. दादी बीसली और अन्य उमरदराज़ लोग जजों के स्थान पर बैठे थे. थॉमस दो बहुत बड़े केक लेकर आया. उनमें से एक जूनियर और दूसरा सीनियर विजेता के लिए था. फिर किसी ने फर्श पर चाक से एक चौकोर बनाया. उसके बाद केक-वाक का कम्पटीशन शुरू हुआ.





सबसे पहले ओरलिन्डा, मिरांडी के पास दौड़ी-दौड़ी आई और उसने पूछा, "तुम्हारा पार्टनर कौन है?"

मिरांडी ने बिना उत्तेजित हुए कहा, "वो बहुत खास है." फिर उसने कहा, "मैं तुम्हें और एज़ेल को जीतने की शुभकामनायें देती हूँ. तुम्हें आज मेरी शुभकामनाओं की ज़रूरत पड़ेगी."

"मैं और एज़ेल? तुम क्या पागल हो गई हो. एज़ेल ने मुझसे पूछा ज़रूर था पर मैं उस अनाड़ी लड़के के साथ बिल्कुल नहीं नाचूंगी," ओरलिन्डा ने पंखा झपकते हुए कहा. "उसे तो चलते हुए सांस तक लेना नहीं आता है. मैं नहीं चाहती कि सब लोगों के सामने वो मेरे पैरों को कुचले!" यह सुनकर बाकी सभी लड़कियां हंसीं.

मिरांडी ने दोनों हाथ अपने कूल्हों पर रखे और फिर वो ओरलिन्डा के पास खड़ी हो गई. "तुम सबके सामने एज़ेल का मज़ाक क्यों बना रही हो?" उसने कहा. "वो मेरे दोस्त है, और हम दोनों मिलकर आज केक जीतेंगे!" फिर सिर को झटका देकर मिरांडी वहां से चली गई.

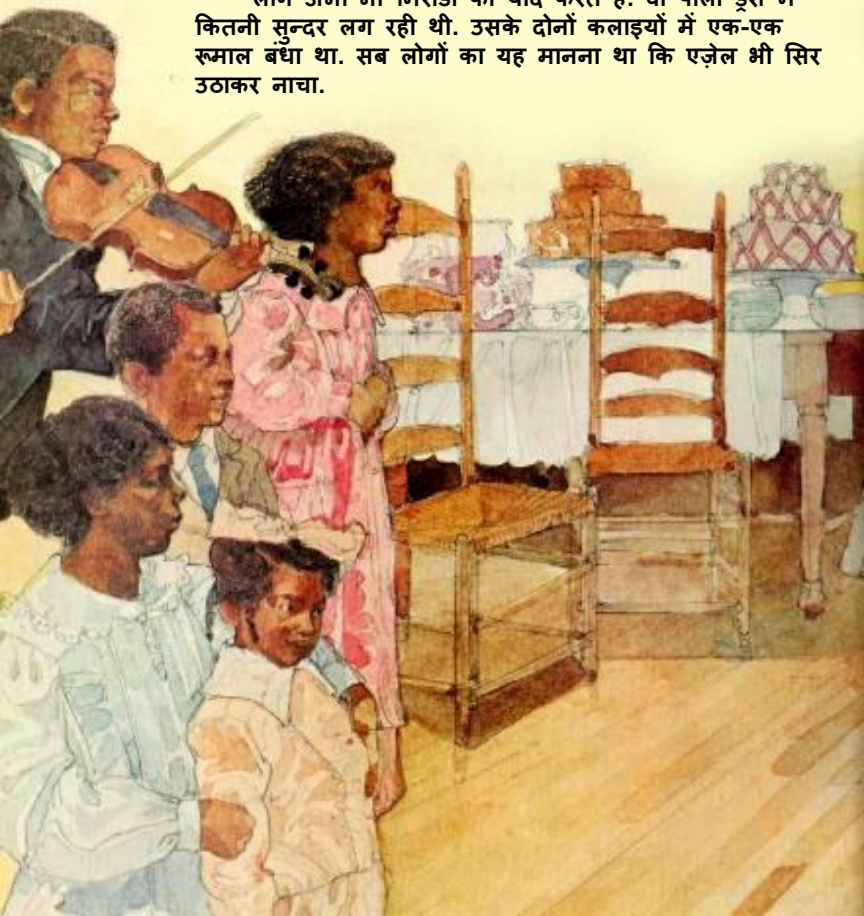
बाहर जाकर मिरांडी ने सोचा कि उसने यह उलटी-सुलटी बात क्यों कही? उसने तो भाई-हवा को पकड़ा था, तो अब एज़ेल उसका पार्टनर कैसे हो सकता था. पर तभी उसके दिमाग में एक आईडिया आया.

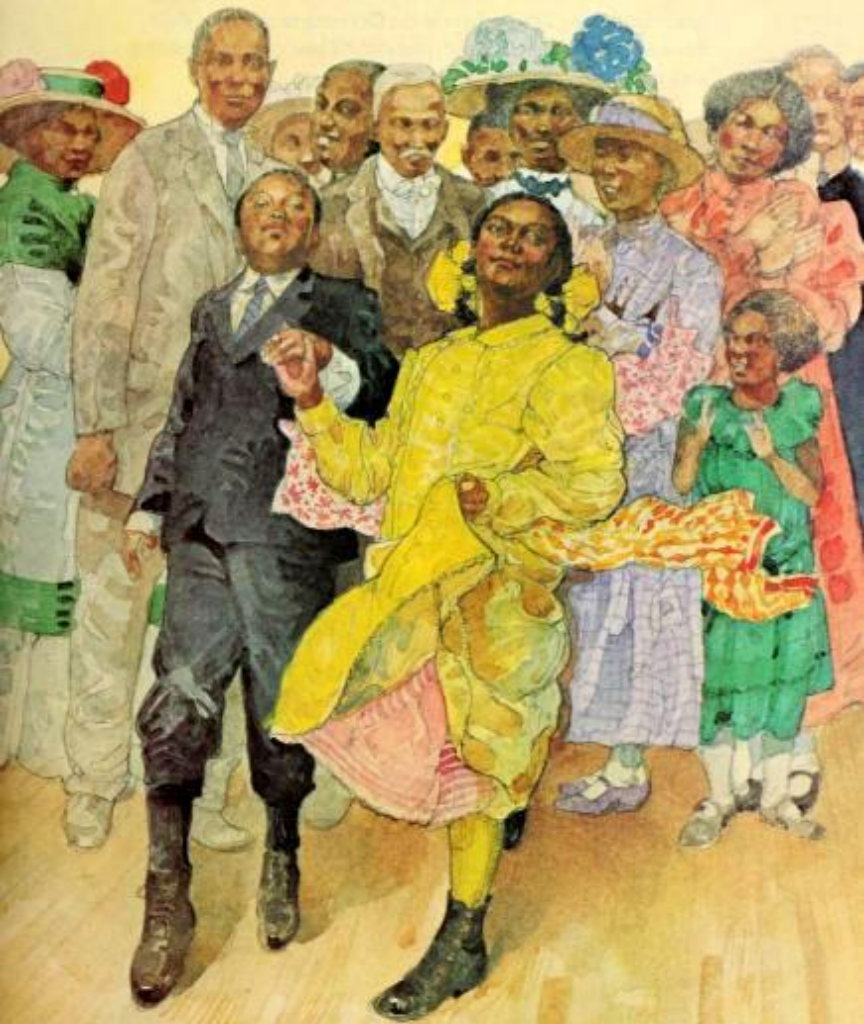
"भाई-हवा," उसने कहा, "क्या तुम अभी भी यहाँ हो?" फिर खलिहान का दरवाज़ा जोर से हिला और ऐसा लगा जैसे उसके कब्जे टूट जायेंगे. "मैं अब तैयार हूँ," वो फुसफुसाई और फिर जल्दी से एज़ेल को खोजने निकली.



कई हफ्ते बीत गए पर शहर के लोग अभी भी मिरांडी और एज़ेल के केक-वाक जीतने की चर्चा कर रहे थे. उस रात उन दोनों ने कमाल का नृत्य किया था. जब संगीत की धुन बदलती तब वे अपनी पीठ का धनुष जैसा मोड़ते और अपने पैरों को तेज़ी से हवा में लहराते.

लोग अभी भी मिरांडी को याद करते हैं. वो पीली ड्रेस में कितनी सुन्दर लग रही थी. उसके दोनों कलाइयों में एक-एक रुमाल बंधा था. सब लोगों का यह मानना था कि एज़ेल भी सिर उठाकर नाचा.





जब दादी बीसली ने मिरांडी और एज़ेल को गोल-गोल घुमते हुए देखा, तो उन्हें लगा जैसे मोमबत्ती की रोशनी में परछाईयाँ थिरक रही हों। फिर वो अपना सिर झटककर जोर से हंसी और उन्होंने कहा, "वो लोग हवा के साथ नाच रहे हैं!"





ISBN 0-443-94073-2